ब्रज के सांस्कृतिक परिदृश्य में चित्रकला एवं उसके संवाहक चित्रकार

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा

से चित्रकला विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थी

हेमन्त भारद्वाज

सह शोध निर्देशिका

डॉ. निशीथ गौड़
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
कला संकाय

शोध निर्देशिका

डॉ. सोनिका
असिस्टेंट प्रोफेसर
ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
कला संकाय

चित्रकला विभाग ,कला संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा-282005

2022

विषय प्रवेश

- शोध संकल्पना 1-2
- सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 2
- परिकल्पना 3
- उद्देश्य 3
- चर 4
- कार्य प्रणाली 4
    - अनुसंधान अभिकल्प
    - प्रदत्त संकलन 4
        - प्राथमिक स्रोत
        - द्वितीयक स्रोत
    - प्रतिदर्श आकार 4
    - सीमाएँ 4
- निष्कर्ष 5
- आधुनिक युग में प्रासंगिकता 5

शोध संकल्पना

कला शब्द इतना व्यापक है कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक विशेष पक्ष को छूकर रह जाती हैं। कला में मानव मन संवेदनाएँ उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने, चिन्तन को मोड़ने तथा अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता है। कला जीवन को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से समन्वित करती है। भारतीय परम्परा के अनुसार कला वे सभी क्रियाएँ हैं जिनमें कौशल अपेक्षित है। कला वह क्षितिज है जिसका कोई छोर नहीं। यह अनेक विधाओं को अपने में समेटे हुए है।

विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार- कलानां प्रवरं चित्रं धर्मार्थ काम मोक्षदम् ।

अर्थात् सभी कलाओं में श्रेष्ठ कला चित्रकला है, जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष देने वाली है । मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है। जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयत्न करता है यही उसकी आत्माभिव्यंजना है। अपनी रंगों से भरी तूलिका से चित्रकार अपने मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है। कला की प्रत्येक विधा का आधार अभिव्यक्ति ही है एवं अभिव्यक्ति भी एक प्रकार से अनुकृति कही जा सकती है। जैसा कि रवीन्द्रनाथ टैगौर ने कहा कि, कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है, अतः अभिव्यक्ति को मन की अनुकृति कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। यही पक्ष पाश्चात्य विद्वान प्लेटो ने भी रखा कि कला सत्य की अनुकृति है और इस अनुकरण की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जैसा कि सर्वविदित है कि सत्य, सम्बोधन ईश्वर के लिए है अतः अधिकतर कलाकारों का चित्रण विषय ईश्वर से सम्बन्धित रहा ही है। ब्रज के तो लगभग सभी कलाकारों ने इसी सूक्ति को अपने मन में धारण कर भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं को चित्रित करने का उद्देश्य बना लिया और अनेकों विधाओं में कार्य करते हुए इस धर्मक्षेत्र की धार्मिकता को आज भी अक्षुण्ण बना रखा है। समय के प्रभाव से चित्रण विधाओं में परिवर्तन होता रहा है।

ब्रजभूमि के धार्मिक, साहित्यिक व सांस्कृतिक इतिहास के साथ-साथ ललित कलाओं का भी एक लम्बा इतिहास है। यहाँ की स्थापत्य कला में बेलबूटेदार जालियाँ, तोरण द्वार व अलंकृत स्तम्भ आदि दर्शनीय हैं एवं ब्रज की

सांझी कला, भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में अपना विशेष स्थान रखती है, किन्तु ब्रज की सभी कलाएं श्री कृष्ण को समर्पित हैं। मैं जन्म से इसी परिवेश में रहा हूँ इसलिए मुझपर कृष्ण विषयक प्रभाव स्वाभाविक है। मुझे विश्वास है कि मैं इस विषय पर पूर्ण निष्ठा से कार्य कर पाऊँगा।

ब्रज क्षेत्र के वृन्दावन की चित्रकला का आरम्भ श्री राधा कृष्ण की अष्टसखियों में से एक चित्रा सखी के द्वारा हुआ है ऐसा पौराणिक मत् है। चित्रा सखी चित्र रचना में प्रवीण थीं। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ब्रज का इतिहास अति विस्तीर्ण है। इसी क्रम में किशनगढ़ के महाराज सावंत सिंह ने भी साँझी एवं लघुचित्रण आदि विधाओं को संरक्षण प्रदान किया। यहाँ की कला परम्परा के अन्तर्गत श्री बाँकेबिहारी एवं श्री हरिदास जी के चित्रों की विशेष परम्परा है। कुछ चित्रकार इस परम्परा को आज भी संजोए हुए हैं। वृन्दावन के अत्यन्त रमणीय होने के कारण विदेशी कलाकार भी यहाँ रहकर श्री राधाकृष्ण विषयक चित्रों का सृजन कर रहे हैं। उनके द्वारा बनाए गए चित्र आज समूचे विश्व को कृष्ण सौन्दर्य का पाठ पढ़ा रहे हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

एक नियोजित अनुसंधान कार्य का सबसे पहला तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन करके किये जा रहे अनुसंधान कार्य की सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक पृष्ठभूमि तैयार करना है। मैंने अपने शोध कार्य के विषय के अध्ययन हेतु अनेक पुस्तकों, संदर्भित ग्रन्थों व पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन द्वारा समय विशेष के सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, भौगोलिक तथा कलात्मक स्वरूप का ज्ञान होता है।

भारतीय चित्रकला, राय कृष्णदास द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसमें भारतीय चित्रकला की विशेषताओं का वर्णन मिलता है। इसमें चित्रकला के सिद्धान्तों का भी वर्णन मिलता है। इसका अध्ययन करके मुझे चित्रकला सम्बन्धी नियमों व सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त हुआ है।

ब्रज की कलाओं का इतिहास, प्रभूदयाल मित्तल द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसमें ब्रज की कलाओं का इतिहास वर्णित है। इसमें वृन्दावन की अनेक कला विधाओं का वर्णन मिलता है। इसके अध्ययन से मुझे ब्रज की चित्रकला के पारम्परिक स्वरूप का ज्ञान हुआ।

'The Art of Transcendence', ए. सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसमे कृष्ण चित्रों की विशेषताओं का वर्णन मिलता है। इसका अध्ययन करके मुझे वृन्दावन के मन्दिरों में चित्रित इस्कॉन के चित्रकला सम्बन्धी नियमों व सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त हुआ है।

वृन्दावन धामानुरागावली,**कवि गोपालराय** द्वारा लिखित पुस्तक है, जिसमें वृन्दावन के पारम्परिक स्वरूप का वर्णन मिलता है। इसके अध्ययन से मुझे वृन्दावन की चित्रकला के पारम्परिक स्वरूप का ज्ञान हुआ।

परिकल्पना

अनुसंधान प्रक्रिया में विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त करने का एक माध्यम, परिकल्पना है एवं इसके द्वारा ही अनुसंधानकर्ता, स्पष्ट व मान्य निष्कर्षों तक पहुँचता है। परिकल्पना शोधकर्ता को अनुसंधान की दिशा में निर्देशित करती है।

चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना रहा है। पाषाण काल से ही आदिमानव ने गुफा में चित्रण करना आरम्भ कर दिया था। पाषाण काल से समकालीन कला में नये-नये आयामों, कला तकनीकों का निरन्तर विकास होता आया है।

मेरे शोध विषय **ब्रज के सांस्कृतिक परिदृश्य में चित्रकला एवं उसके संवाहक चित्रकार** द्वारा ब्रज की चित्रकला परम्परा के अन्तर्गत चित्रण की अलग अलग विधाओं में नवीन प्रयोग व भगवान कृष्ण के सौन्दर्य चित्रण का वर्णन कर सभी के समक्ष प्रस्तुत करने का सम्यक प्रयास करूँगा।

उद्देश्य

1. ब्रज की चित्रकला परम्परा व पारम्परिक चित्रकारों पर प्रकाश डालना।

2. ब्रज क्षेत्र के प्रमुख चित्रकारों का परिचय प्राप्त करते हुए उनके कला संसार को जानने का प्रयास करना।

3. कलाकारों की कलाकृतियां के विषय, विभिन्न विधाओं, माध्यमों व शैलियों का अध्ययन करना।

4. कला जगत के कृष्ण चित्रों में बृज संस्कृति व चित्रकला परम्परा के योगदान पर प्रकाश डालना।

चर

- पारम्परिक चित्रकला के रूप
- विषय सामिग्री
- कला के तत्व
- संयोजन के सिद्धान्त
- ब्रज की कला के संवाहक चित्रकार

कार्य प्रणाली

अनुसंधान अभिकल्प

मैंने अपने शोध कार्य **ब्रज के सांस्कृतिक परिदृश्य में चित्रकला एवं उसके संवाहक चित्रकार** के लिए वस्तुविश्लेषण विधि एवं वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का चयन किया है।

प्रदत्त संकलन

प्राथमिक स्रोत :- पारम्परिक कलाकृतियाँ

द्वितीयक स्रोत :- मन्दिरों, शोध संस्थानों, संग्रहालयों व पुस्तकालयों का भ्रमण, इण्टरनेट वेबसाइट

प्रतिदर्श आकार

इस शोध कार्य हेतु मैं ब्रज की चित्रकला की विभिन्न विधाओं एवं चित्रकारों की लगभग 150-200 कलाकृतियों का चयन करूँगा।

सीमाएँ

प्रत्येक शोध कार्य की समय सीमा निर्धारित होती है। मैं अपने शोधकार्य की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए केवल 84-कोसीय ब्रज क्षेत्र की कला परम्परा एवं कलाकारों से सम्बन्धित लगभग 150-200 कलाकृतियों का चयन करूँगा, जो मेरे शोध का मुख्य विषय रहेंगे।

निष्कर्ष

कला हमें हमारी संस्कृति से अवगत कराती है। कला, कलाकार के मन से प्रकट हुई उन भावनाओं का समूह है जो कि वातावरण, समाज एवं देश के प्रभाव से कलाकार के अन्तःकरण में पल्लवित होती हैं। कलाकार की कृतियों में समाज और देश का जो प्रतिविम्ब दिखाई देता है उसमें संस्कृति की एक अमिट छाप परिलक्षित होती है। इसी प्रकार ब्रज की कला परम्पराव, सौन्दर्यानुभूति एवं पुरातन् संस्कृति को प्रकट करती है जो मेरे अध्ययन का मुख्य विषय है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

संस्कृति का संरक्षण हमारे जीवन का एक विशेष पक्ष है इस शोध अध्ययन में पुरातन् संस्कृति को संरक्षित करते हुए नवीन आयामों तक विस्तारित 84 कोसीय ब्रज की चित्रण परम्परा एवं चित्रकारों कलाकृतियों की विभिन्न विधाओं, कलात्मक पक्षों, विषय तथा तकनीक के महत्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट किया जायेगा, जिसके फलस्वरूप मेरा शोध प्रबन्ध भविष्य के शोधार्थियों हेतु उनके ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होगा।

विषयानुक्रमणिका :

भूमिका : उत्तर भारत के ब्रज क्षेत्र में चित्रकला की पृष्ठभूमि

प्रथम अध्याय : ब्रज का ऐतिहासिक परिचय

1.1 ब्रज की भौगोलिकता एवं ऐतिहासिक परम्परा

1.2 धार्मिक परिप्रेक्ष्य में ब्रज

1.3 ब्रज का कला परिदृश्य

द्वितीय अध्याय : ब्रज का सांस्कृतिक परिदृश्य

2.1 कला व संस्कृति का अन्तर्सम्बन्ध

2.2 ब्रज संस्कृति संरक्षण में कला की भूमिका

तृतीय अध्याय : ब्रज में चित्रकला का पारम्परिक स्वरूप

3.1 ब्रज में भित्ति चित्रों का स्वरूप

3.2 ब्रज की लघु चित्रण परम्परा

3.3 वृन्दावन की साँझी परम्परा

चतुर्थ अध्याय : ब्रज में अलग-अलग सम्प्रदायों की चित्रण परम्परा के संवाहक चित्रकार

पंचम अध्याय : ब्रज की पारम्परिक कलाकृतियों का कलात्मक अध्ययन

उपसंहार

परिशिष्ट : सन्दर्भग्रन्थ सूची

Bibliography

Internet Websites

चित्रफलक सूची

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका के अन्तर्गत मैं, उत्तर भारत के ब्रज क्षेत्र की चित्रकला की पृष्ठभूमि का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करूँगा।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मैं ब्रज के इतिहास को प्रस्तुत करूँगा। इसके अन्तर्गत मैं, ब्रज की भौगोलिकता एवं ऐतिहासिक परम्परा, धार्मिक परिप्रेक्ष्य में ब्रज एवं ब्रज के कला परिदृश्य का वर्णन करूँगा।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत मैं, ब्रज के सांस्कृतिक परिदृश्य का वर्णन करते हुए कला व संस्कृति के अन्तर्सम्बन्ध व ब्रज संस्कृति संरक्षण में कला की भूमिका को प्रस्तुत करूँगा।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत मैं, वृन्दावन की चित्रकला के पारम्परिक स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए, ब्रज के भित्ति चित्रों का स्वरूप, ब्रज की लघु चित्रण परम्परा एवं वृन्दावन की साँझी परम्परा का विश्लेषण करूँगा।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत मैं ब्रज में अलग अलग सम्प्रदायों की चित्रण परम्परा के संवाहक चित्रकारों का परिचय प्रस्तुत करूँगा।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत मैं ब्रज की पारम्परिक कलाकृतियां का कलात्मक विवेचन करूँगा।

उपसंहार के अन्तर्गत मैं ब्रज की पारम्परिक कला व कलाकृतियां की आधुनिक युग में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करूँगा।

संन्दर्भग्रन्थ सूची

- शुक्ल,रामचन्द्र, (1962),चित्रकला का रसास्वादन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी
- शुक्ल, रामचन्द्र, (2009), कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ, फोकस इंफोटेक प्रकाशक, केरल
- मित्तल, प्रभूदयाल, (1975), ब्रज की कलाओं का इतिहास,साहित्य संस्थान,मथुरा
- भारद्वाज,विनोद, (2006), बृहद आधुनिक कलाकोश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- सक्सेना,सरन, (2010), कला सिद्धान्त और परम्परा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली
- सत्येन्द्र, (2005), ब्रजलोक-संस्कृति, ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा
- वाजपेयी, कृष्णदत्त, (1955), ब्रज का इतिहास, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा
- शर्मा, राजेश, ब्रज की साँझी, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन
- कुमार,महाराज, मुगल कालीन ब्रज प्रदेश

Bibliography

- Archer, W.G. - 2004, The Loves of Krishna in, Indian Painting and Poetry Public Domain in The USA
- Forcellino, Antonio - 2011, Contemporary Indian Artist, Polity Publication, U.K.
- Prabhupad, A.C. Bhaktivedanta - 2002, The Art of Transcendence Bhaktivedanta, The Book Trust , International
- Grows, F.S. - 1880, Mathura District Memoir, Central secretariat Library

- Grows, F.S. - Mathura- Brindaban, The Mystical Land of Lord Krishna

Internet Websites

- www.theartofspirituallife.com
- www.purebhakti.com
- hi.brajdiscovery.org
- hi.krishnakosh.org
- www.bhaktiart.net
- in.pinterest.com
- doordarshan.gov.in
- www.facebook.com

परिशिष्ट- चित्रसूची

चित्र 1 - कुसुम सरोवर (भित्ति चित्र)
(स्रोत- कुसुम सरोवर, गोवर्धन, मथुरा)

चित्र 2- वृंदावन की सांझी
(स्रोत-पुस्तक- सांझी भली बनि आई,प्रकाशक- पुष्टि कला संग्रहालय, गोवर्धन, मथुरा)

चित्र 3- लघुचित्र- महारास, चित्रकार- नृत्य गोपाल शर्मा
(Source: https://vrindavantoday.in/editorial/braj-what-i-by-acharya-shrivatsa-goswami/)

चित्र 4- समकालीन चित्र- सेवाकुन्ज,चित्रकार- स्यामारानी दासी
(Source: https://bhaktiart.net/product/seva-kunja-poster/)